दिनांक 24 फरवरी, 2010 को बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी में आयोजित दीक्षान्त समारोह हेतु महामहिम श्री राज्यपाल का उद्‌बोधन।

देवियों और सज्जनों,

मुख्य अतिथि श्री बी0एस0 बासवान, निदेशक, भारतीय लोक प्रशासन संस्थान, प्रो0 एस0वी0एस0 राणा, कुलपति, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, विश्वविद्यालय की कार्य परिषद एवं विद्या परिषद के सदस्यगण, पत्रकार बन्धुओं, छात्र–छात्राओं, देवियों और सज्जनों,

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के चौदहवें दीक्षान्त समारोह के अवसर पर आप लोगों के बीच उपस्थित होने पर मुझे अपार प्रसन्नता

हो रही है। आज जिन विद्यार्थियों को उपाधियाँ व मेडल प्रदान किये गये हैं, सबसे पहले मैं उन्हें, उनके शिक्षकों और उनके अभिभावकों को इस अवसर पर अपनी हार्दिक बधाई देता हूँ।

मेरा सौभाग्य है कि देश की महान विभूति वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई की कर्म–स्थली में मुझे पुनः आने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। इससे पूर्व अभी इसी 01 फरवरी को मुझे झांसी महोत्सव में भी आने का अवसर प्राप्त हुआ था। उत्तर प्रदेश में अनेक क्षेत्र ऐसे हैं, जो हमारी परम्परा, इतिहास एवं संस्कृति के विकास के साक्षी रहे हैं और आज भी हैं। बुन्देलखण्ड भी उनमें से एक है। यहाँ वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई की देशभक्ति, स्वाभिमान एवं अदम्य शौर्य तथा पराक्रम

का प्रतीक झांसी का किला आज भी हमें उच्च आदर्शों के लिए मर मिटने की याद दिलाता है।

झांसी एक ओर तो लक्ष्मी बाई के महान बलिदान का साक्षी है, वहीं दूसरी ओर मैथिलीशरण गुप्त तथा डाक्टर वृन्दावन लाल वर्मा जैसे साहित्य साधकों की साधना स्थली भी रहा है।

भर्तृहरि नीतिशतकम् के इस श्लोक से मैं अपना दीक्षान्त सम्बोधन प्रारम्भ करता हूँ–

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्त धनं
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरूणां गुरूः।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परा देवता

विद्या राजसु पूज्यते न तु धनं विद्याविहीनः पशुः।।

"विद्या ही मनुष्य का सबसे श्रेष्ठ रूप है, छिपा हुआ सुरक्षित धन है। विद्या भोग–विलास देने वाली है तथा यश एवं सुख देने वाली है। विद्या गुरूओं की भी गुरू है। परदेश में विद्या ही बन्धुजन है, विद्या सबसे उत्कृष्ट देवता है। राजाओं के बीच भी में विद्या ही पूजी जाती है, धन नहीं। इसलिये विद्या से हीन मनुष्य पशु ही है"।

शिक्षा का उद्‌देश्य हमें केवल बहुत विद्वान या धनी बना देना ही नहीं है। शिक्षा का उद्‌देश्य वास्तव में व्यक्ति में नीर–क्षीर विवेक पैदा करते हुए उसे सकारात्मक लक्ष्यों के प्रति समर्पित करना होता है। इसलिए शिक्षा नीति में चरित्र और संस्कारों के निर्माण पर जोर

दिया जाना अत्यन्त आवश्यक है। डा0 सम्पूर्णानन्द ने कहा है – ‘‘मन और शरीर का, चरित्र के भावों का परिष्कार हो, शिक्षा का यही प्रयोजन है’’।

आप में से कुछ उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे तथा कुछ विभिन्न संस्थाओं में सेवा करेंगे। आप कहीं भी रहें, आप पायेंगे कि शिक्षा और कर्मठता ही सफलता की एकमात्र कुंजी है। आपकी उपलब्धियों से आपकी पहचान निर्मित होगी और यह आपकी एक महत्वपूर्ण उपलब्धि होगी।

‘‘विद्वतम् च, नृपत्वं च, नैव तुल्यम, कदाचनः,
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान सर्वत्र पूज्यते।’’

यह शिक्षा ही है जिसके द्वारा मनुष्य देश एवं विदेश में समादृत होता है। ज्ञान से आत्मविश्वास आता है जो हमारे व्यक्तित्व को आभा प्रदान करता है। ज्ञान और निपुणता हमारे सबसे मूल्यवान मित्र हैं। हमारा शरीर पांच तत्वों से मिलकर बना है। इनमें से पृथ्वी हमें धैर्य एवं प्रेम, वायु हमें गति तथा स्वतंत्रता, अग्नि हमें साहस तथा ऊर्जा, आकाश हमें समानता एवं उदारता तथा जल हमें पवित्रता एवं निर्मलता की शिक्षा देते हैं।

भारत प्राकृतिक व मानव संसाधनों से समृद्ध देश है। प्रकृति ने मानव जीवन हेतु उपयोगी अनेक प्राकृतिक सम्पदाएं हमें प्रचुर मात्रा में देकर अपना शुभाशीष दिया है। हमें वेद, पुराण, श्रीमद्भगवत् गीता

जैसी धरोहरें विरासत में मिली हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इन धरोहरों के ज्ञान एवं आधुनिक तकनीक के मिश्रण से हमारा युवा वर्ग मानव जीवन के उत्थान व विकास में अपना बहुमूल्य योगदान देगा। मैं आपको बताना चाहूँगा कि इसी से आपका जीवन कृतार्थ होगा और आप प्रकृति व समाज के ऋण से उऋण होंगे।

आज हमारे समाज में बिना परिश्रम के कुछ प्राप्त कर लेने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। यह गहन चिन्ता का विषय है। याद रखें कि कठोर श्रम के बिना कुछ भी सार्थक नहीं हो सकता। भाग्य उसी का पक्ष लेता है, जो प्रयास करता है। यह सत्य ही कहा गया है कि **Success is 90% perspiration and 10% inspiration.**

शिक्षा संस्थान हमें केवल विद्या ही नहीं वरन् व्यावसायिक तथा कलात्मक निपुणता भी प्रदान करते हैं। लेकिन कोई साक्षर व्यक्ति तभी शिक्षित कहलाता है जब उसमें जीवन मूल्य, देशभक्ति, ईमानदारी जैसी चारित्रिक विशेषतायें हों। मैं आशा करता हूँ कि इस विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं कर्मचारी इस ओर विशेष रूप से सचेत रहते हुए अपने—अपने कर्तव्यों एवं दायित्वों के प्रति जागरूक रहकर देश व समाज की सेवा करते रहेंगे।

वास्तविक प्रगति के आकाश को छूने के लिये निहित स्वार्थों के कवच को तोड़ना आवश्यक है। इसलिए आप इस पर भी अवश्य विचार करें कि आज के सूचना व संचार के युग में, जब संसार

सिमटता जा रहा है, तब जाति, धर्म व साम्प्रदायिकता की दीवारों से अपनी प्रगति को अवरूद्ध करना कहाँ तक उचित है।

याद रखें कि हमें आवश्यकता है केवल उत्साह और निःस्वार्थ कर्म की। भ्रष्टाचार, अनाचार और असमानता की खर–पतवार का समूल नाश करके हमें एकता, सहभागिता और विकासशीलता का बीजारोपण करना है। इसी से समाज, देश और विश्व में शांति स्थापित हो सकेगी। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारे छात्र ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की अवधारणा को साकार करने में अपना योगदान देकर इस विश्वविद्यालय को गौरवान्वित करेंगे। मैं आशा करता हूँ कि इस विश्वविद्यालय के शिक्षक व प्रशासनिक कर्मचारी पारदर्शिता, ईमानदारी

व निःस्वार्थ प्रयासों से शैक्षणिक स्तर के नये कीर्तिमान स्थापित करेंगे।

मैं सभी पदक विजेताओं और उपाधि धारकों को एक बार फिर से अपनी हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ देते हुए उनके सफल जीवन तथा उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ। मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि आपके सद्‌कर्मों से न केवल आप यशस्वी होंगे, बल्कि आपकी शिक्षण संस्था व देश की कीर्ति भी बढ़ेगी। आप अपने कर्म व आचरण से अपने विश्वविद्यालय और पूरे देश का गौरव बढ़ायें, यही मेरा आपको आशीर्वाद है।

मैं श्रीमद् भागवत महापुराण के इस श्लोक से अपनी बात समाप्त करता हूँ–

स्वस्त्यस्तु विश्वस्य खलः प्रसीदतां
ध्यायन्तु भूतानि शिवं मिथो धियः।
मनश्च भद्रं भजतादधोक्षजे
आवेश्यतां नो मतिरप्यहैतुकी।।

''विश्व में शांति हो, जो दुर्जन हों, वे सज्जन बनें, सभी प्राणी सर्वकल्याण का चिन्तन करें, हमारे विचार पवित्र हों, हमारी अपेक्षा रहित प्रज्ञा प्रेमपूर्ण हो।''

धन्यवाद–नमस्कार।